

सनातन धर्म कालेज (लाहौर), अम्बाला छावनी

एवम्

हरियाणा संस्कृत अकादमी, पञ्चकूला  
(संस्कृत की पुनःसंरचना योजना के अधीन)  
एक-दिवसीय अन्तःवैषयिक राष्ट्रिय सम्वाद गोष्ठी

## Consciousness as life principle in Sanskrit Tradition and Life Sciences: Looking for integrating approach

संस्कृत परमपरा एवम् जीवविज्ञान में संवित् (चेतना) जीवन-तत्त्व के रूप में – समन्वितिकरण की खोज

आयोजक- संस्कृत विभाग एवम् जुओलोजी एवम् बौटनी विभाग

अकादमिक समर्थन – सनातन धर्म आदर्श संस्कृत कालेज, अम्बाला छावनी

दिनाङ्क - 30 अगस्त, 2012, दिन – वीरवार

समय- प्रातः 9.30 से 2.00 दोपहर

मान्यवर,

संस्कृत विभाग एवम् सहयोगी वनस्पतिविज्ञान-जीवविज्ञान विभाग की ओर से आपको एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विचार चर्चा के लिए उपरोक्त तिथि, समय एवम् स्थान सादर आमन्त्रित करता है। इस विषय पर चर्चा के लिए किसी भी विषय के विद्वान या जिज्ञासु का हार्दिक स्वागत है।

What we mean by living thing and what we understand by the term life and what consciousness is? How Consciousness is different from being alive? Can we understand and explain consciousness as we explain matter? Is consciousness energy then how we explain consciousness in terms of energy? And are we absolutely sure being alive means consciousness? You being a manifestation of consciousness and matter are humbly requested to share your views /enquires/ knowledge /experience and understanding with us.

**पूर्व-मीमांसा** - Some words and meanings being used by human race are so obvious that are very hard to explain but very easy to experience. Consciousness is one such word which needs to be interrogated by the scientists, psychologists, philosophers, thinkers, writers and artists. Scientifically and traditionally consciousness can be explained in two ways i.e. *what it is* and *what it is not* but the problem is how to explain, what terms, definitions, concepts or what kind of experiments can establish its existence.

If language with all its words, meanings and formal structural usability has been accepted as a mean of knowledge then both Science and Sanskrit tradition can definitely claim that their information, knowledge, understanding about the factual world is valid since both use language as means of knowledge. So the question arises why science and tradition think differently or how their understanding about the factual world differ when we as human beings live our lives scientifically and traditionally at the same time. For every just thinking human being it becomes imperative to look for synthesis of both science and tradition.

At least it is true that science has deliberately limited its study to the material world and has never been able to grasp the meaning of life in traditional terms/ concepts through out its history of development and on the other hand literature has never been able to cope up with scientific investigations. And the million dollar question still remains unanswered - *How does consciousness arise- the living, aware experience of being?*

The scientific world's most accepted theory holds that it comes from electrical and chemical processes known to unfold in the brain some of which are yet to be discovered. Science considers plants, all sorts of

animals including sponges, corals, worms, reptiles and human as living but hesitate to label consciousness in certain animals where nervous system with brain is either absent or poorly developed or above all the question of consciousness in plants is often dismissed as absurd. *Does consciousness arise only by virtue of Nervous System?* Then why do vines grab trees, flowers turn to light, and leaves of *Mimosa pudica* (*Lajwanti*) close when touched? Tropism is the prompt reply of a botanist! Plant chemical transmitters like auxins, ABA are released and show the response but then chemical neurotransmitters like acetylcholine and dopamine also exist in human nervous system. Then, maybe plant consciousness is a modified and spread out version of our own. Moreover, if plants do not have consciousness then why one feels peaceful and refreshed in their presence? Is it only oxygen or some kind of energy emanating from them? *Why great saints like Buddha and Mahavira have meditated and attained enlightenment only under a tree?*

*Botanists, biologists, consider consciousness a subject of psychologists and philosophers who argue that consciousness is mind-stuff quite distinct from the brain. Some call it a soul. Is it really so? Or is it only the brain game as suggested by biologists? In the brain, does consciousness require ascending arousal, recurrent feedback, specific regions, or does it move through the brain as a mobile agent, or conscious pilot? At what stage of human life does the consciousness arise? Does it arise as soon as the life is conceived in the mother's womb or in later stages when the nervous system starts making its appearance? Does the genetic make up of living contain genes for consciousness? Will the Computer Scientists working in the field of Artificial Intelligence be able to create a computer with consciousness? What is the place of consciousness in the natural order? What are the differences between conscious and unconscious processes in the mind?*

To arrive at a clear consensus and to fully understand the mystery and the concept of consciousness as life principle, interactive dialogue of intellectuals and academicians from various disciplines is required.

**उत्तर-मीमांसा** – संस्कृत वाङ्मय के अनेकानेक मूलभूत शब्दों -चित्, चित्ति, चेतना, प्रकाश, ब्रह्म, पुरुष, शिव, आदि को दो परस्पर समन्वित भागों में समझा जा सकता है – एक भाग में वे शब्द हैं जो चेतना के प्रतीक हैं और दूसरे भाग में मिथक हैं। इन दोनों से चेतना का आरोह-अवरोह, विस्तार-संकोच, उन्मीलन-निमीलन, प्रकाश-विमर्श की परिभाषा, अवधारणा, व्यवहार को समझा जा सकता है परन्तु बुद्धिगत विवशताएँ तब स्पष्ट होने लगती हैं जब चेतना रहस्यमयता में अवगुण्ठित होने लगती है- जैसे- वानस्पतिक चेतना, पार्थिव चेतना, जलीय चेतना, आकाशीय चेतना आदि आदि। इन प्रयोगों से चेतना के सम्भवतः संवेदनात्मक सूक्ष्मताओं को स्पष्ट करना चाहते हैं लेकिन मानवीय दृष्टि न तो अत्यन्त सूक्ष्मता और दूरगामिता का दावा कर सकती है और न ही विशालता की अपरिमितता का। ऐसे में वेद, उपनिषद्, पुराण, ९ आस्तिक-नास्तिक दर्शन और साहित्य, आयुर्वेद आदि तार्किक निष्कर्ष क्या प्रस्तुत करते हैं और वह हमारी समझ में कितना में आ सकता है – यह इस संगोष्ठी का लक्ष्य है। मूलभूत प्रश्न अत्यन्त सरल एवम् स्पष्ट है कि- चेतना (चित्) क्या है? इसका स्वरूप क्या है? इसके कितने भेद हैं या एक है? इसका व्यवहार क्या है? संस्कृतज्ञ जब आनन्दमय कोश, विज्ञानमय कोश, आदि आदि की चर्चा करते हैं तो वे मूलतः चित् और प्रकृति/ पदार्थ के संयोजन को स्पष्ट करते हैं न कि चेतना के भेदों को, स्वरूप को। चित्/ चेतना के कारण प्रकृति/ पदार्थ चेतनवत् प्रतीत होता है परन्तु यह स्थिति चेतना के व्यवहार को स्पष्ट नहीं करती। क्या सम्पूर्ण भाषा पदार्थ के व्यवहार पर आधारित है – जा रहा है, खा रहा है, गा रहा है- ये सभी क्रिया परक वाक्य पदार्थ या प्रकृति की गुणात्मक स्थिति को स्पष्ट करते हैं न कि चेतना के। **ऐसी ही अनेकानेक विचारों, शास्त्रीय मान्यताओं, अनुभवों के साथ आपका चर्चा के लिए स्वागत है।**

**विशेष –**

१. अपनी प्रतिभागिता के विषय में २५ अगस्त, २०१२ तक सूचित करना आवश्यक है।
२. संस्कृत के विद्वानों से सादर अनुरोध है कि चर्चा केवल उपयोगिता की दृष्टि से अथवा किसी समस्या को परिभाषित/ लक्ष्य करके करें। आपके प्रश्न एवम् जिज्ञासाएँ सादर साग्रह आमन्त्रित हैं।
३. हरियाणा संस्कृत अकादमी के नियमानुसार सामान्य यात्रा भत्ता देय होगा।
४. आयोजन की सफलता तथा अधिकतम ज्ञान चर्चा के लिए कृपया समय का सम्मान करें।

५. संस्कृत के अतिरिक्त अन्य किसी भी विषयों के प्रध्यापक संगोष्ठी में परिचर्चा के लिए भाग लेने के लिए सादर आमन्त्रित हैं।

आशुतोष आंगिरस  
संगोष्ठी निदेशक

डा० दिव्या जैन  
अध्यक्षा एवम् एसोसिएट प्रोफ़ेसर,  
डिपार्टमेण्ट बोटनी एवम् जुओलोजी

डा० सुधीर कुमार  
निदेशक  
हरियाणा संस्कृत अकादमी

डा० देशबन्धु  
प्राचार्य

098963-94569

ई-मेल- [sanskrit2010@gmail.com](mailto:sanskrit2010@gmail.com), Blog – sanatan Sanskrit

### विशिष्ट सहयोग

डा० विष्णु दत्त शर्मा, प्राचार्य, डी एच डी एस डी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय। 09896356235

### आयोजन एवम् स्वागत समिति

डा० उमा शर्मा 09466046186 संस्कृत विभाग	सुमित छिब्रर 09813610531 जुओलोजी विभाग	नन्दिनी शर्मा 09466658357 जुओलोजी विभाग	कँवलदीप कौर 09996838257 जुओलोजी विभाग	आस्था 09416470530 जुओलोजी विभाग
डा० नरेश बत्रा 09416464807 संस्कृत कालेज	डा० श्यामनाथ झा 09896447434 संस्कृत कालेज	डा० राजेश्वर प्रसाद 09802014571 संस्कृत कालेज	डा० सरजीवन शर्मा 09416555047 संस्कृत कालेज	डा० देवकीनन्दन पुरोहित 09416464912 संस्कृत कालेज

सनातन धर्म कालेज (लाहौर), अम्बाला छावनी  
(संस्कृत की पुनःसंरचना योजना के अधीन)  
एक-दिवसीय राष्ट्रिय सम्वाद गोष्ठी

**Consciousness as life principle in Sanskrit Tradition and Life Sciences: Looking for  
integrating approach**

संस्कृत परमपरा एवम् जीवविज्ञान में संवित् (चेतना) जीवन-तत्त्व के रूप में – समन्वितिकरण की खोज  
आयोजक- संस्कृत विभाग एवम् जुओलोजी एवम् बौटनी विभाग

अकादमिक समर्थन – सनातन धर्म आदर्श संस्कृत कालेज, अम्बाला छावनी

दिनाङ्क - 30 अगस्त, 2012, दिन - वीरवार

समय- प्रातः 9.30 से 2.00 दोपहर

कार्यक्रम

पंजीकरण - ०९.०० से ०९.३० तक

उन्मेष - ९.३० से ११.३० तक

चाय-पान - ११.३० से ११.४५ तक

विमर्श - ११.४५ से २.०० तक

भोजनावकाश - २.००

प्रतिष्ठायाम्

---

---

---

---

प्रेषक  
प्राचार्य  
सनातन धर्म कालेज (लाहौर),  
अम्बाला छावनी ।  
१३३००१